Dr.Raman Kumar thakur

Asstt. professor (Guest)Deptt. Of Economics, D.B.College, jaynagar, Madhubani.

Class:-B.A.part-1(H.)Paper-1st.Date:-05.09.2020.

Lecture n.-05.

Topic:- उदासीनता वक्र विश्लेषण(Indiferece Curve Analysis)

:- आधुनिक अर्थशास्त्री तुष्टिगुण को गणना वाचक विचार न मानकर एक क्रम वाचक विचार मानते हैं। इस क्रमवाचक विचार का प्रारंभ वर्ष 1881 में एजवर्थ की पुस्तक मैथमेटिकल फिजिक्स से हुआ है । वर्ष 1906 में परैटो ने तुष्टिगुण के संख्यात्मक माप पर संदेह व्यक्त किया तथा 1934 में हिक्स एवं एलेन ने उदासीनता वक्र विश्लेषण का व्यवस्थित रूप से विकास किया ।

हिक्स द्वारा प्रतिपादित उपभोक्ता व्यवहार के अध्ययन का आधार कर्मसूचक प्राथमिकता है और यह दुर्बल क्रमबद्धता पर आधारित है।

उदासीनता वक्र की विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया है:- प्रोफेसर * बोल्डिंग के शब्दों में, "समान अनुराग दिखाने वाली वक्र रेखाएं उदासीनता वक्र कहलाती है। क्योंकि वह वस्तुओं कि ऐसे संयोगों को व्यक्त करते हैं जो एक दूसरे से नो तो अच्छे होते हैं और ना ही बुरे"

Scanned with CamScanner

* प्रो. स्ट्रगलर के शब्दों में, यदि वस्तुएं विभाज्य है तो हम X और Y वस्तुओं के अनेक ऐसे संयोग बना सकते हैं जो संतोष की दृष्टि से समान हो।

* उदासीनता वक्र की विशेषताएं:-1). उदासीनता वक्र बाएं से दाएं की ओर गिरती है अर्थात उनका ढाल नकारात्मक होता है।

2). ऊंचा उदासीनता वक्र अपेक्षाकृत ऊंचे संतुष्टि के स्तर को व्यक्त करता है।

3). उदासीनता वक्र अशोक के उद्गम बिंदु की ओर उन्नतोदर होते हैं।

4). उदासीनता वक्र एक दूसरे के समानांतर नहीं होते है। 5). उदासीनता वक्र लंबवत नहीं होते हैं।

6). उदासीनता वक्र एक दूसरे को नहीं काटते हैं।

* उदासीनता वक्र विश्लेषण की मान्यताएं:-

1.) उपभोक्ता विवेकशील होता है।

2). वस्तुएं समरूप तथा विभाज्य है।

3)दुर्बल क्रमबद्धता।

4) घटती सीमांत प्रतिस्थापना दर।

5) क्रमवाचक दृष्टिकोण।

6) उपभोक्ता की संक्रमकता (Transitivity) व्यवहार।

Scanned with CamScanner